© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि

Dheerendra Kumar Singh
यूजीसी नेट–जेआरएफ (शिक्षाशास्त्र),
शोध छात्र, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्व विद्यालय फैजाबाद

वर्तमान समय में प्रायः ही प्राथमिक विद्यालयों पर नकारात्मक टीका टिप्पणी सुनते ही रहते हैं जो विशेषतः सरकारी कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित होती है। परन्तु जिस तरह एक ही सिक्के के ो पहलू होते हैं, ठीक उसी प्रकार विद्यालयी कार्यकरण की भी मुख्यतः दो पहलू होते है एवं सरकारी तथा अन्य शिक्षक गण। प्रथम पहलू के रूप में सरकार कल्याणकारी दायित्वों के साथ–साथ पूॅजीवादी शक्तियों पर कार्य करती है जो अनेकों चरणों में होकर गुजरती है और अप्रत्यक्ष भी होती है। अतः आवश्यकता है कि इसके अतिरिक्त अन्य पहले पर ध्यान देने की।

विद्यालयी व्यवस्था को गुणात्मक वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण व प्रत्यक्ष भूमिका शिक्षक द्वारा ही निर्वाहित की जाती है, इसीलिए आवश्यकता है कि शिक्षक को स्वयं से ही प्रश्न करना होगा और जवाब तलाना होगा कि क्या शिक्षण कार्य छात्र अधिगम हेतु उपयुक्त है? क्या छात्र प्राप्त ज्ञान को व्यवहारिक रूप में परिणित कर पा रहे हैं? अथवा नहीं? इन प्रश्नों का जवाब खोजना होगा और इसे कक्षा कक्ष वातावरण में आरोपित करके कक्षा कक्ष वातावरण का निर्माण तथा समायोजन व अधिगम हेतु अनुकूल बनाना होगा।

प्राथमिक स्तर के छात्र अत्यन्त संवेदनशील में होते हैं जिसमें शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है इसीलिए आवश्यकता है कि शिक्षक को विषयी ज्ञान के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक, दर्शन आदि का ज्ञान हो तथा वह पूर्णतः अपने कार्यों हेतु प्रशिक्षित हो तभी वह बालक का पूर्णरूप से विकास कर उनकी शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि कर सकता है।

हमारे शिक्षक ही एक सुद्ढ़ एवं विकासशील देश की मजबूत नींव है, बच्चों के माता–पिता के अलावा शिक्षक ही बच्चों के ज्ञान और जीवन मूल्यों का मुख्य आधार है, किसी भी छात्र और समाज का भविष्य शिक्षकों के हाथ में पूरी तरह सुरक्षित होता है इसीलिए शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहा जाता है।

आमतौर पर 25–3 वर्ष से ही बालक प्लेस्कूल में दाखिला लेकर शिक्षकों से जुडत्रता है और यह सफर ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएट/एम0फिल0 और पी–एचडी0 की डिग्री पाने तक चलता है, इतना ही नहीं प्रोफेशनल ट्रेनिंग व अन्य भी शिक्षक द्वारा ही दी जाती है, ऐसे में बालपनसे व्यस्क होने तक छात्रों के व्यक्तित्व पर शिक्षकों का प्रभाव साफ दिखाई पड़ता है जो छात्रों के व्यक्तित्व के विकास और चरित्र निर्माण का भी हिस्सा होता है।

शिक्षकों को इसब ात पर विशेष ध्यान देना चाहिये कि छात्रों हेतु कक्षा हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण करें जिससे छात्र आसानी से कक्षा कक्ष के वातावरण में समायोजित हो सके क्योंकि प्राथमिक स्तर के छात्र हेतु विद्यालयी वातावरण नया होता है ये अचानक से घर व समाज के स्वतंत्र वातावरण से बाधित वातावरण में प्रविष्ट करते हैं और

जब तक विद्यालयी वातावरण उनके अनुकूल नहीं हो पाती उन्हें समायोजित होने में समस्या बनी रहती है और कक्षा कक्ष वातावरण में स्वयं को सुरक्षित महसूस किये बिना छात्र अधिगम हेतु प्रेरित नहीं होते। अतः शिक्षकों द्वारा विद्यालयी व कक्षा कक्ष वातावरण का अधिगम अनुकूल बनाने का भरसक प्रयास करना चाहिए और जब तक शिक्षक यह करने में सफल नहीं होता है तब तक वह अधिगम कार्य हेतु अग्रसरित ही नहीं हो सकता है।

प्राथमिक स्तर के छात्र अत्यन्त मासूम होते हैं अतः जब तक शिक्षक विद्यार्थियों की दुनिया में प्रविष्ट नहीं करते, उनके बारे में समझते नहीं– उनके साथ घुलते मिलते नहीं तब तक वह उनकी समस्याओं व रूचियों को समझ नहीं सकते हैं और उनकी समस्याओं व तकलीफों को समझते हुए समाधान की पहल भी नहीं कर सकते हैं क्योंकि कई बार छात्र ऐसी समस्याओं से जूझ रहे होते हैं जो उनके सीखने में बाधक होती है।

अतः शिक्षक को बालक की प्रवृत्तियों, बोलचाल आदि के माध्यम से छात्रों के व्यवहार का अध्ययन किया जाना चाहिए जिससे छात्र की रूत्रियों का पता लगाकर उसी के अनुरूप ही उन्हें शिक्षा प्रदान की जाय क्योंकि यदि एक शिक्षक इन बातों की ओर नहीं ध्यान देता है तब वह यह मानकर चलता है कि हमारे अत्यधिक प्रयास के बावजूद भी अमुक छात्र सीख नहीं सकता और वह उन छात्रको लिये बिना ही अपने शिक्षक कार्य को जारी रखता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षक इसके प्रति जागरूक रहे है कि एक कक्षा कक्ष में उपस्थित सभी छात्र शिक्षण कार्य से प्रभावित हो रहे हो और जब तक ऐसा न हो तब तक उसे प्रयास जारी रखना चाहिए तब ही हम प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि हेतु शत प्रतिशत योगदान दे सकेगें।

प्राथमिक स्तर के छात्र अल्पावस्था की वजह से अपना सही गलत नहीं समझ सकते इसीलिए आवश्यकता है कि शिक्षक उन्हें सदैव मार्गदर्शित करने में सहायता प्रदान करें।

मार्गदर्शन हेतु छात्रों के बारे में जानना आवश्यक है और यह तभी सम्भव है जब छात्र स्वयं को अभिव्यक्त करें। अतः छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ाने हेतु शिक्षक को कुछ आवश्यक प्रयास होगें जैसे–शैक्षिक सत्र के शुरूआती माह में जब बच्चे विद्यालय आते हैं तो उस दौरान आरम्भिक कक्षा–कक्षीय गतिविधियों के अन्तर्गत अवकाश के दिनों में रहे बच्चों के अनुभवों को उनकी मातृभाषा में सुनने के साथ ही उनके अनुभवों पर चर्चा का आयोजन किया जाय जिससे छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है साथ ही छात्रों का शिक्षक व विद्यालय के प्रति जुड़ाव भी पैदा होता है साथ ही शिक्षक छात्रों के विचारों को सुनकर उनकी धारणाओं को समझ कर मार्गदर्शित करता है और उनके चहुमुखी विकास हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। छात्रों का चहुमंखी विकास ही प्राथमिक शिक्षा की गुणात्मक वृद्धि का महत्वपूर्ण तत्व है।

कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिपक का निवास होता है अतः शिक्षक को इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य के साथ–साथ पाठ्यसहगामी क्रियाओं व खेलकूद पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास का क्रम भी सुचारू से चलता रहे।

शिक्षकों द्वारा पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा छात्रों में रचनात्मक क्षमता का भी विकास होता है और क्रिएटीविटी छात्रों की वौद्धिक क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

प्राथमिक स्तर के छात्रों के अधिगम हेतु एक विशेष शर्त यह होती है वह उन्हें विषयवस्तु को ग्रहण करते हैं जिन्हें वह प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं अथवा जो उनके जीवन से सम्बन्धित होते हैं अतः शिक्षकों को इस बात पर

विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि छात्र जिन भी विषय को छात्र के समक्ष प्रस्तुत करते हैं उन्हें समझाने के लिए वे उनके आस–पास के वातावरण से सम्बन्धित करें अथवा छात्र से सम्बद्ध उदाहरणों को प्रस्तुत करें। स्वयं से सम्बद्ध ज्ञान से छात्र अधिक आकर्षित होते हैं और उसे आसानी से समझ कर ग्रहण कर सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि शिक्षकों का महत्वपूर्ण कार्य है कि अपने दायित्वों को समझे और छात्रों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्रदान करें जिससे छात्र जो एक सशक्त संसाधन है शिक्षक के जरिये अपना चहुॅमुखी विकास कर सफलता के आसमान पर विचरण करें। क्योंकि बचपन ही वह आधारशिला है जो सम्पूर्ण जीवन की इमारते खड़ी करता है। अतः जैसा बीज बचपन में बोया जायेगा वैसा ही जीवन रूपी वृक्ष में फल लगेगा इसीलिए प्राथमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा अपना विशेष स्थान रखती है जिसमें शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान करना चाहिए।

वर्तमान समाज में शिक्षक का ध्येय होना चाहिए कि वह बच्चों के चरित्र का निर्माण करें तथा उनमें ऐसे मूल्यों का रोपण करें जो सीखने की क्षमता में वृद्धि करें जिससे उनमें अत्मविश्वास उत्पन्न हो और वे कल्पनाशील तथा सृजनशील बन सके जिससे वे भविष्य की चुनौतियों का सामना कर जीवन की प्रत्येक प्रतिस्पर्धा में खे उतर सके।

शिक्षण के गुणः महान शिक्षक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्ण शिक्षकों को सलाह देते थे कि हमें सतत् बौद्धिक निष्ठा एवं सार्वभौम करूणा की खोज में रहना चाहिए। ये दोनों गुण किसी सच्चे शिक्षक की पहचान है। एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण और बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करें कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सके। ज्ञान प्राप्ति के लए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक रोल माडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है बल्कि हमारे जीवन को संवारने समय महान सपने और उद्देश्य होते हैं। दूसरी बात यह कि शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक रूप रेखा, एक उत्पाद प्रणाली का विकास कर सके। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्जवललित करता है। आशा और मूल्याधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और कालेज शिक्षा के मेरे शिक्षकों ने मुझे कई दशक आगे लिए तैयार किया। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता है। शिक्षण का ध्ययः शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएॅ पैदा करना है। ये क्षमताएं शिक्षण संस्थाओं के ध्यय से प्राप्त होती है। तथा शिक्षकों अनुभव से सुदृढ़ होती है ताकि शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद छात्रों में नेतृत्वकारी विशिष्ठता आ जाए। एक कथन है कि 'अगर आप निष्ठावान हैं तो और कोई चीज अर्थ नहीं रखती। अगर आप निष्ठावान नहीं है तो किसी भी दूरी चीज का कोई अर्थ नहीं है। इस कथन से एक समीक्षात्मक संदेश मिलता है। अगर समाज में एक लाख योग्य, चरित्रवान एवं निष्ठावान छात्र हो जाए तो वर्तमान कमजोर समाज को प्रत्येक पॉच वर्ष में एक सुखद झटका दिया जा सकता है और यह कार्य शिक्षक, जो गुरु है, प्रेरणास्रोत हैं, वही कर सकते हैं। शिक्षक दिवस डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन हमारे देश के राष्ट्रपति भी रहे है और एक श्रेष्ठ अध्यापक भी। उनका जन्म पॉच सितम्बर को हुआ था। जब भी कभी उनके जन्म दिन को सार्वजनिक रूप से

मनाने की बात कही जाती थी तो वे कहते थे कि मेरा जन्म दिन नहीं पॉच, सितम्बर को अध्यापक दिवस ही मनाएँ जिससे सभी अध्यापकों को सम्मान मिले। छात्र–उत्साह के साथ भाग लेना चाहिए। देश के प्रत्येक स्कूल पॉच सितम्बर को अध्यापक दिवस बड़े उत्साह के साथ आयोजित करें। इस दिन हम अपने अध्यापकों का सम्मान करें कि कैसे उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की भावी पीढ़ी के निर्माण में लगाया है और उनके पढ़ायें हर छात्र किस प्रकार जिम्मेदार नागरिक बनकर समाज और राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं। इस दिन विशेष उपलब्धियों के लिए दिन अध्यापकों को हम सम्मानित करते हैं, उससे अन्य अध्यापक भी प्रेरणा लेते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है, जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहे हैं, उन सबके लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते है। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीजिया (ज्ञान का भंडार) है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर है। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर माननवीय गतिविधियों को प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा इक्कीसवीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जायेगी।